

‘मनुष्य मात्र बंधु है’ यही बड़ा विवेक है,
पुराण पुरुष स्वयं पिता प्रसिद्ध एक है ।
फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद हैं ।
परंतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद हैं ।
अनर्थ है कि बंधु ही न बंधु की व्यथा हरे;
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ।

शब्दार्थ :

मर्त्य – मरणशील, पशुप्रवृत्ति – पशु जैसा स्वभाव, मदांध – जो गर्व से अंधा हो ।
चित्त – मन, स्वयंभू – परमात्मा / स्वयं उत्पन्न होनेवाला, अंतरैक्य – आत्मा की एकता /
अंतःकरण की एकता, प्रमाणभूत – साक्षी

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :
(क) कविने कैसी मृत्यु को सुमृत्यु कहा है ?
(ख) यहाँ कोई अनाथ नहीं है ऐसा कविने क्यों कहा है ?
(ग) ‘मनुष्य मात्र बंधु है’ से आप क्या समझते हैं ? स्पष्ट कीजिए ।
2. निम्नलिखित पंक्तियों के भाव दो-तीन वाक्यों में स्पष्ट कीजिए :
(क) ‘मनुष्य मात्र बंधु है’ यही बड़ा विवेक है,
पुराण पुरुष स्वयंभू-पिता प्रसिद्ध एक है ॥
(ख) रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ चित्त में ।
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में ॥
3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द / एक वाक्य में दीजिए :
(क) कवि किससे न डरने की बात कर रहे हैं ?
(ख) कवि कैसी मृत्यु को प्राप्त करने का परामर्श दे रहे हैं ?

- (ग) कवि मनुष्य की किस पशुप्रवृत्ति की बात कर रहे हैं ?
 (घ) मनुष्य क्या पाकर मदांध हो जाता है ?
 (ङ) सनाथ होने का घमण्ड क्यों नहीं करना चाहिए ?
 (च) भाग्यहीन कौन है ?
 (छ) संसार में मनुष्य का बंधु कौन है ?
 (ज) पुराण पुरुष हमारे क्या हैं ?
 (झ) वेद किसका प्रमाण देते हैं ?
 (ञ) कौन बंधु की व्यथा हरण कर सकता है ?

भाषा-ज्ञान

1. उपयुक्त विभक्ति-चिह्नों से शून्य स्थान भरिए :
 (से, में, के, का, को, के लिए)
 (क) फलानुसार कर्म ————— अवश्य बाह्य भेद हैं ।
 (ख) वेद अंतरैक्य ————— प्रमाण हैं ।
 (ग) वही मनुष्य है जो मनुष्य ————— मरे ।
2. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बताइए :
 प्रवृत्ति, अंतरिक्ष, मृत्यु, विचार, व्यथा, अनर्थ ।
3. निम्नलिखित शब्दों के प्रयोग से एक-एक वाक्य बनाइए :
 विवेक, प्रवृत्ति, मर्त्य, बंधु, व्यथा ।



एक तिनका



अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

कवि परिचय :

आयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का जन्म उत्तर प्रदेश के अजमगढ़ जिले के निजामाबाद कस्बे में सन् 1865 में हुआ था। स्कूली शिक्षा समाप्त करके वे सरकारी नौकरी में लग गए। हिन्दी, संस्कृत और फारसी में उन्होंने अच्छा ज्ञान प्राप्त किया था। वे हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में अध्यापक भी रहे।

हरिऔध जी खड़ीबोली हिन्दी के प्रथम कवियों में हैं। उनकी भाषा सरल, मुहावरेदार और भावगर्भक होती है।

हरिऔध की प्रमुख रचनाएँ हैं – प्रिय प्रवास, वैदेही वनवास, कर्मवीर, रसकलश, चोखे चौपदे, चुभते चौपदे, आदि।

यह कविता :

यह एक छोटी सी कविता है पर है बड़े काम की। छोटी छोटी चीजें ही हमारे जीवन को एकदम बदल देती हैं। मनुष्य को अपने पर बड़ा गर्व होता है। कवि कहते हैं वे एक दिन घमण्ड में भरकर एकदम ऐंठे हुए से तन कर छत के मुँडेर पर खड़े थे। ऐसे में कहीं दूर से एक छोटा-सा तिनका आकर उनकी आँखों में गिरा।

कवि झुंझलाकर परेशान हो उठे। आँख जल रही थी और लाल होकर दुखने भी लगी। लेखक की ऐसी हालत देखकर लोग कपड़े की मुँठ देकर उनकी आँख को सेकने लगे कि शायद थोड़ा आराम मिल जाए पर नहीं। दर्द किसी तरह कम नहीं हुआ। ऐसे में कवि को ऐंठ (घमण्ड) मानों चुपचाप भाग गई थी। वे तो किसी भी तरह उस पीड़ा से छुटकारा पाना चाहते थे।

जब किसी तरह आँख से तिनका निकला तो मानो उनका विवेक उन्हें ताना मार रहा था। तू इतना अकड़ क्यों दिखाता है। एक छोटा-सा तिनका ही तेरे अहंकार को तोड़ने में काफी है।